सब के लिए खिलौने

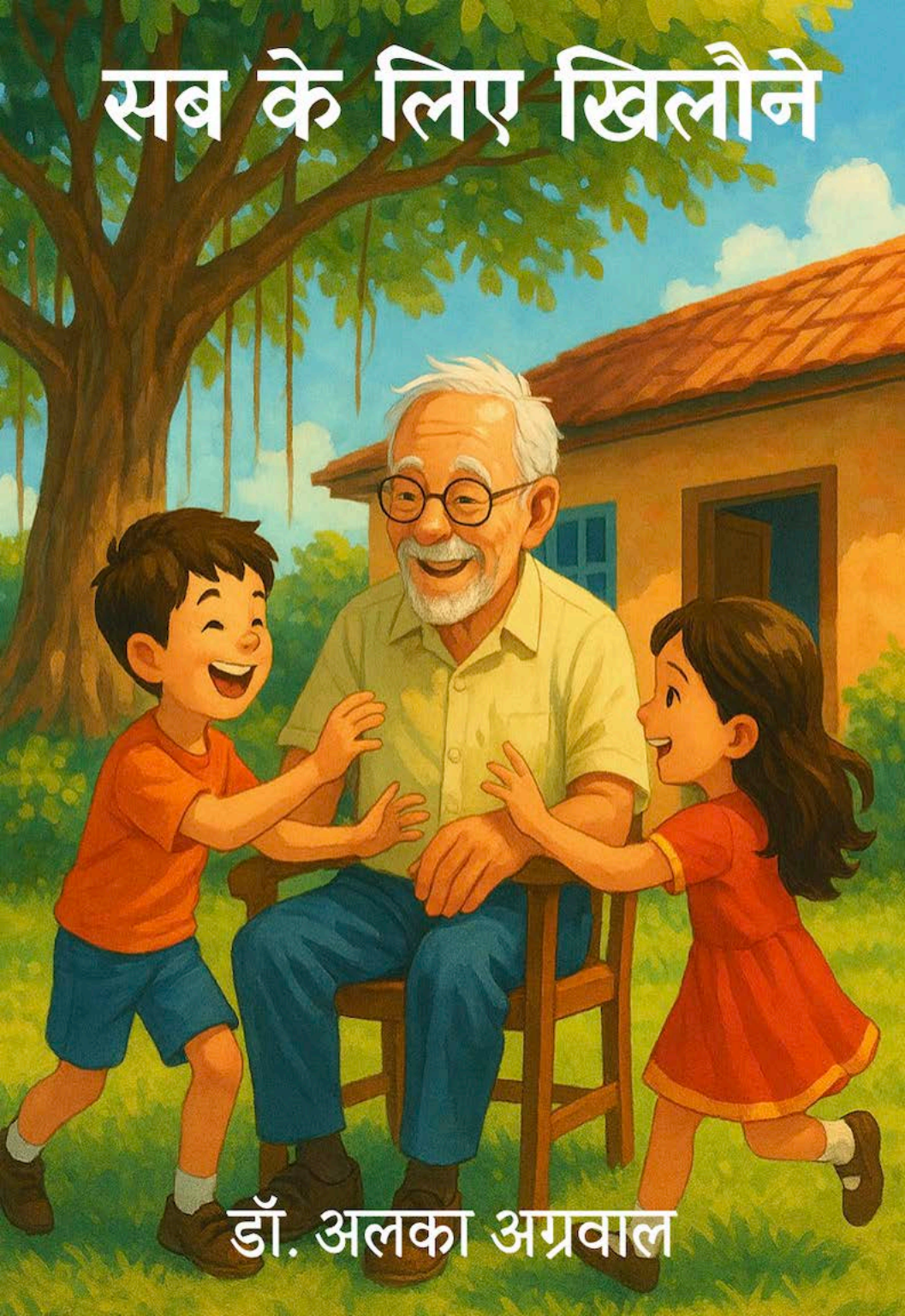

डॉ. अलका अग्रवाल

सब के लिए खिलौने

बाल नाटक संग्रह

सब के लिए खिलौने

बाल नाटक संग्रह

डॉ. अलका अग्रवाल

दो शब्द

बच्चो! जब भी स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है, तब एक नाटक भी उसमें सम्मिलित होता है। बच्चों को अभिनय करना और अभिनय देखना दोनों ही बहुत पसंद होते हैं। कलाकार बच्चे अभिनय करके फूले नहीं समाते हैं। जब उनके अभिनय पर तालिया बजती हैं, तब अभिनय करने वाले बच्चों के साथ-साथ उनके दोस्तों की खुशी का ठिकाना भी नहीं रहता है। लेकिन परेशानी एक ही है कि बच्चों के लिए मंचन के योग्य नाटक कम लिखे जाते हैं।

मैंने इसी समस्या को देखते हुए इन नाटकों की रचना की है। इन सभी नाटकों को बहुत ही आसानी से मंचित किया जा सकता है। ये सब नाटक बच्चों के मन की बात कहते हैं और इन सभी में लगभग बच्चे ही प्रमुख पात्र हैं। इन नाटकों को पढ़ो, समझो और मंच पर अभिनय करो। गर्मी की छुट्टियों में आस-पड़ोस के बच्चों के साथ मिलकर भी अभिनय कर सकते हो, बहुत मजा आएगा। मंच सज्जा, अभिनय, पात्रों की वेशभूषा आदि के लिए प्रयत्न करने में आनंद तो आएगा। साथ ही, आत्मविश्वास बढ़ेगा और तुम्हारे व्यक्तित्व को रचनात्मक आयाम भी मिलेगा। अगर मंच पर अभिनय नहीं कर सको, तो अपने मोबाइल पर अलग-अलग पात्रों की आवाज में नाटक रिकॉर्ड कर सकते हो। यह भी बड़ा मजेदार खेल होगा।

नाटकों को पढ़ो और अभिनय की दुनिया में प्रवेश करो। तुम्हें कैसे लगे ये सभी नाटक मुझे अवश्य बताना। मेरा पता किताब में उपलब्ध है।

-डॉ. अलका अग्रवाल

अनुक्रमणिका

1. मैं क्यों करूँ..... 9
2. नेहा का वहम 17
3. सर्वश्रेष्ठ उपहार 23
4. चमत्कार 29
5. सब के लिए खिलौने..... 36
6. जया की समझदारी 43
7. सब्जी लोक में टिंकू..... 48
8. मित्रता का प्रकाश 55

मैं क्यों करूँ

प्रमुख पात्र

1. संजू-(8 साल का बच्चा)

2. संजू की मम्मी

3. संजू के पापा

4. संजू की दीदी

5. सूत्रधार

प्रथम दृश्य

(संजू की माँ पलंग पर लेटी हैं, उनकी तबियत कुछ ठीक नहीं है। संजू बाहर से खेलकर घर में प्रवेश करता है।)

मम्मी- संजू, बेटा संजू, आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। बुखार और दर्द की गोली तो मेरे पास है, तुम ज़रा एक गिलास पानी दे दो तो मैं दवाई खा लूँ।

(संजू उड़ती सी नजर माँ पर डालता है और उपेक्षा से माँ को देखता है।)

संजू- मम्मी आप इतनी भी बीमार नहीं हो कि एक गिलास पानी भी अपने आप लेकर नहीं पी सकतीं। मैं टिंकू के घर जा रहा हूँ खेलने, देर हो रही है।

(मम्मी दर्द से कराह रही है और दुखी तथा नम